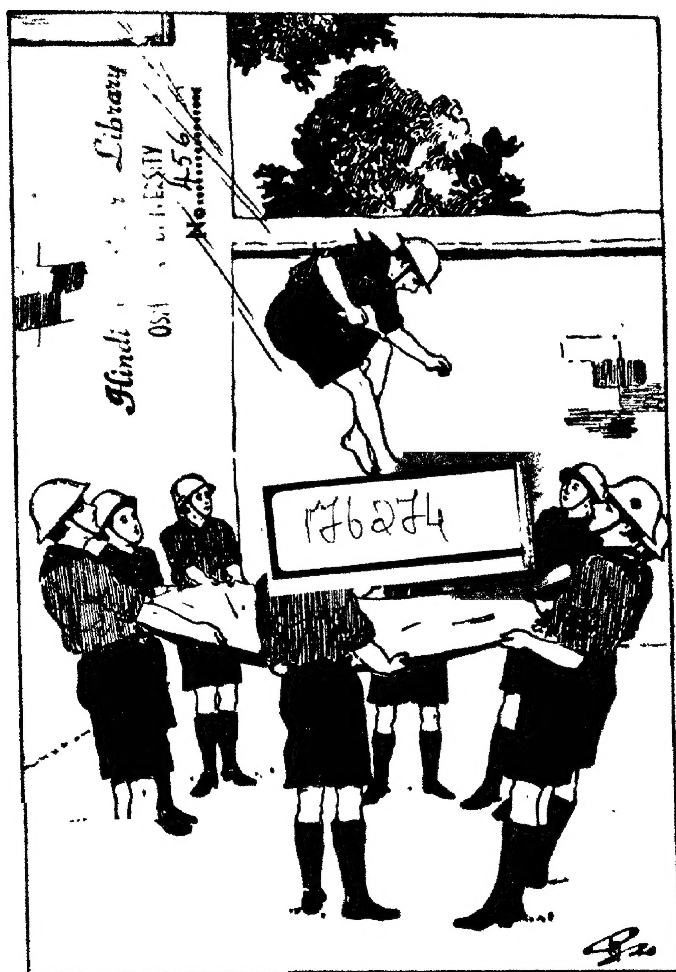
TIGHT BINDING BOOK

अग्निकाण्ड में सेवा



लिखित

श्रीराम वाजपेयी

अग्निकांड में सेवा

लेखक

पंडित श्रीराम वाजपेयी

सदस्य, भारत सेवक-समिति और नेशनल आर्गनाइज़िंग

कमिश्नर, हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन



प्रकाशक

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम अवृत्ति] [मूल्य ॥)

भूमिका

इसमें सन्देह नहीं कि 'अग्निकांड में सेवा' का ज्ञान न केवल स्काउटों के लिए बल्कि सर्वसाधारण के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसकी आवश्यकता इसलिए और हो गई है कि इन दिनों, जब कि समराग्नि से प्रायः सारा संसार जल रहा है, अग्निबाण-द्वारा लगाई गई आगों का सामना जनता को करना पड़ता है।

यह छोटी सी पुस्तक लीडर प्रेस द्वारा प्रकाशित 'ह० ह० हि०' (हवाई हमले से हिफ़ाजत) नामक पुस्तक का एक तरह से अंश है, पर, आशा है कि, स्वतंत्र-रूप से भी, यह उपयोगी सिद्ध होगी। स्काउटों का परम कर्त्तव्य है कि वे इस किताब में बताई गई सेवा-विधियों को अच्छी तरह जानें और आभ्यासिक-रूप से उनमें निपुण हो जायँ।

इलाहाबाद
२५ नवम्बर, १९४०

श्रीराम वाजपेयी

अग्निकांड में सेवा

इस अमर का सभी को पता है कि मौजूदा योरप की लड़ाई में अब तक गैसें नहीं इस्तेमाल की गई हैं। आबहवा के खयाल से हिन्दुस्तान में भी गैसें नहीं इस्तेमाल की जायँगी। लेकिन आजकल योरप में भूकम्पन गोले और अग्निवाण खुले हाथों इस्तेमाल किये जा रहे हैं। अगर कभी हिन्दुस्तान पर हमला हुआ तो ये दोनों तरह के गोले यहाँ भी काम में लाए जायंगे। इसलिये हिन्दुस्तान के स्काउटों को इन दोनों वाणों के भयंकर परिणाम से मुक़ाबिला करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ह० ह० हि० नाम की पुस्तक में भूकम्पन गोलों से और अग्निवाण से रक्षा करने वाले उपायों का बयान किया जा चुका है। इस गुटका में यह बताया जायगा कि अगर अग्निवाण से या दूसरे कारणों से आग लग जाय तो ऐसे मौक़े पर स्काउट को क्या करना चाहिए।

अगर पता लगाया जाय तो मालूम होगा कि हर साल देश भर में हजारों की तादाद में आदमी और जानवर आग की भेंट होते हैं। बहुत से अगर जी गये तो उमर भर के लिये बेकार हो जाते हैं! बाजों को सख्त चोट आती है और बाजों के अंग छिन्न भिन्न हो जाते हैं।

माल असबाब के नुक़सान के साथ ही साथ लोगों की साख उठ जाती है क्योंकि वे अपने लेन-देन के वायदे को पूरा नहीं कर सकते। उन्हें नौकर चाकरों की संख्या में भी कमी करनी पड़ती है क्योंकि जब तक जले हुए कारबार को फिर से न खड़ा किया जाय नौकर-चाकर को फ़िज़ूल पैसा देना कौन गवारा करेगा। इससे सिद्ध हुआ कि आग लगने के कारण बेकारी भी बढ़ जाती है। जिसके घर या कारख़ाने में आग लगती है वह तो आफ़त में फँसता ही है मगर दूसरे लोगों को भी जो उससे ताल्लुक़ रखते हैं बड़ी मुसीबत उठानी पड़ती है।

इसलिए हर गृहस्थ और कारोबार करने वाले आदमी को चाहिए कि वह आग से हिफ़ाज़त के लिये हमेशा तैयार रहे और ऐसे साधनों को जुटाए कि अगर कहीं किसी सबब से भी आग लग जाय तो उसका वहीं पर तुरन्त अन्त कर दिया जाय।

मसल मशहूर है कि जब घर में आग लगे तब कुँआ खोदने से क्या फ़ायदा है। इसका यह मतलब हुआ कि हर गृहस्थ और कारखाने के मालिक को पहले ही से तैयार रहना चाहिए। मकान के रहने वालों और कारखानों में काम करने वालों को पहले ही से मालूम रहे कि ज़रूरत के वक़्त किसे कहां पर और क्या काम करना होगा। अगर भाग बचने की नौबत आ जाय तो किधर से और कैसे भागा जाय अगर शहर में फ़ायरब्रिगेड है तो उसे कैसे बुलाया जाय। अगर मकान में आग बुझाने का कुछ सामान रखा है तो मालूम रहे कि वह कहां रखा है और उसे कैसे इस्तेमाल किया जाय। अगर लोगों को इन ज़रूरी बातों की जानकारी न हुई तो ज़रूरत के वक़्त बड़ी गड़बड़ी मच जाती है और जान-माल का नुक़सान भी ज़्यादा हो जाता है।

अगर किसी दफ़्तर या कारखाने में बहुत से लोग काम करते हैं तो उनमें से कुछ लोगों को अग्निकाण्ड में सेवा के काम के लिए पहले ही से मुक़र्रर कर देना चाहिए। जो लोग इस तरह की सेवा के लिए मुक़र्रर किए जायँ उन्हें खुद अपनी मर्ज़ी से इस काम में आगे निकलना चाहिए। जो लोग किसी दबाव के सबब से सेवा के लिए तैयार होते हैं वे अन्त में धोखा दे जाते हैं।

बताने की ज़रूरत नहीं कि किसी काम को भी कामयाबी के साथ करने के लिए अभ्यास की ज़रूरत होती है। हर स्त्री-पुरुष को आग लगने पर सेवा करने का पूरा अभ्यास करना चाहिए। हर एक को मालूम रहे कि जब आग लगने की सूचना मिले तो उसे जल्दी से जल्दी किस स्थान पर पहुँच कर क्या करना चाहिए। इतमीनान कर लेना चाहिए कि दफ़्तर और कारखानों में काम करने वाले हर एक आदमी को मालूम है कि आग लगने की सूचना क्या होती है। आग में सेवा

करने वालों को अलावा अपने अपने कामों के दूसरों के भी कामों की जानकारी होनी चाहिए। अगर कोई शख्स गैरहाज़िर भी रहा तो इसके सबब से काम में रुकावट न होगी।

आग लगने के कारण---

आग लगने के कारण बेशुमार हैं। उनकी सूची देना असम्भव है। किसी न किसी लापरवाही के सबब से आग केवल लग ही नहीं जाती बल्कि तेज़ी के साथ फैल भी जाती है। भरसक कोशिश करनी चाहिए कि उन कारणों को हटा दिया जाय जिनके ज़रिये से आग लग सकती हो और फैल भी सकती हो। रद्दी कागज़, कपड़ों के चिथड़े, खास कर जिनमें किसी प्रकार का रोग़न लगा है, और दूसरी तरह की रद्दी चीज़ों को इधर-उधर नहीं पड़ी रहने देना चाहिये। उन्हें इकट्ठा कर किसी कनिस्टर में रखना चाहिए। आज-कल बहुत से तरल पदार्थ और दूसरी चीज़ें ऐसी निकली हैं जो बहुत जल्द आग पकड़ती हैं। ऐसी चीज़ों को छूने-छेड़ने में बड़ी एहतियात करनी चाहिए और जहाँ ऐसे पदार्थ रक्खे हों वहाँ पर यह भी इन्तज़ाम होना चाहिए कि अगर कहीं आग लग जाय तो उसे तुरन्त बुझा दिया जाय।

आग क्या है---

आग वास्तव में एक रासायनिक क्रिया है। किसी तरह का भस्म (Oxide) बनाने के लिए आक्सीजन की आवश्यकता होती है। जब कोई वस्तु जलकर क्षार होने लगती है तो उसमें से हमेशा गर्मी निकलती है। आग को जलने में और किसी वस्तु को भस्म करने में आक्सीजन की बड़ी ज़रूरत पड़ती है। जिस वायुमंडल में हम रहते हैं उसमें पांचवा भाग आक्सीजन का होता है। इस कारण जहां हवा मौजूद है वहाँ पर आग लगने और चीज़ों के जल कर स्वाहा हो जाने का भी खतरा मौजूद है। एक छोटी सी फुलझड़ी या दियासलाई की बत्ती हमारे रोज़मर्रा के काम आने वाले सामानों में से बहुतों में आग

लगा देने के लिए काफ़ी होती है और एक नन्ही-सी लौ की अगर एहतियात न की जाय तो वह बड़ा भयंकर रूप धारण कर लेती है ।

आग बुझाने के सिद्धान्त—

किसी वस्तु को भस्म करने के लिये गर्मी आवश्यक है । अगर जलती हुई वस्तु के तापमान को नीचा कर दिया जाय तो आग बुझ जायगी। इसी प्रकार अगर किसी जलती हुई चीज़ तक हवा न पहुंच सके तो आग बुझ जायगी । मगर कुछ ऐसी भी चीज़ें हैं जिनमें ये तरकीबें कारगर न होंगी । मिसाल के लिये सेल्यूलायड पर इन दोनों तरकीबों का कुछ असर न होगा । क्योंकि जलते समय सेल्यूलायड में से उसे क्षार कर देने के लिए उसमें से काफ़ी आक्सीजन बनती है ।

इसलिए आग बुझाने के सिद्धान्त दो तरह के खास उपायों में बांटे जा सकते हैं:—

(१) भस्म करने वाले तापमान को ठंढक पहुँचा कर नीचा कर देना ।

(२) जलती हुई चीज़ों को तोप (ढक) देना जिससे कि वहाँ तक हवा न पहुँच सके जिसके द्वारा आक्सीजन मिलती है ।

आग पकड़ने वाली चीज़ों की श्रेणियाँ—

मोटे ढंग से आग पकड़ने वाली सामग्री को तीन श्रेणियों में बांट सकते हैं:—

(१) Freely burning—बिना रुकावट के जल जाने वाली चीज़ें, जैसे लकड़ी, कोयला इत्यादि ।

(२) Highly inflammable—बहुत तेज़ी से आग पकड़ने वाले तरल पदार्थ, जैसे पेट्रोल, अलकोहल, स्प्रिट, वार्निश, कोयले और दूसरी गैसें इत्यादि ।

(३) Electrical fires—बिजली से आग लग जाना, मसलन शार्ट सरकट से, फ़्यूज़ से या ओवर लोडेड केबिल से ।

वह आग जो अग्निबाण या दूसरे कारणों से लग जाय मामूली तरकीबों से बुझाई जा सकती है। वे तरकीबें तीन हैं :—

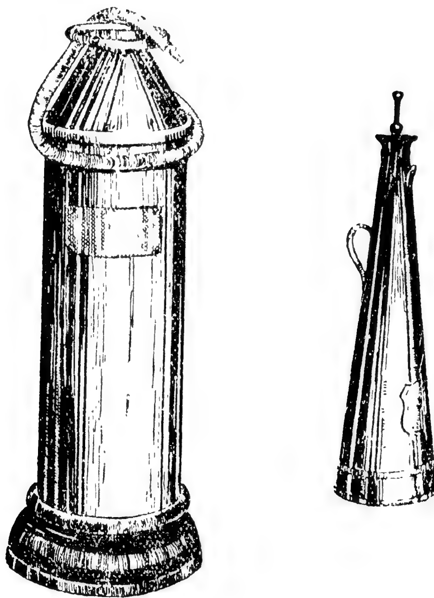
(१) आग बुझाने वाले रासायनिक यंत्र

(२) बालू और मिट्टी

(३) पानी

आग बुझाने वाले रागायनिक यंत्र

इस्तेमाल की हिदायतें यंत्र के ऊपर छपी रहती हैं। स्काउट को उन्हें कंठस्थ करके उन पर अमल करना चाहिए।



रासायनिक यंत्र—चित्र नं० २

बालू और मिट्टी

इन्हें एक बड़ी मात्रा में जुटाना चाहिए जिससे आग अच्छी तरह ढँक जाय और उसमें आक्सिजन न पहुँच सके। मिट्टी के तेल या पेट्रोल में लगी हुई आग को हमेशा बालू और मिट्टी को ही डाल कर बुझाना चाहिए। अगर पानी से इस तरह की आग को क़ाबू में लाने की कोशिश की जायगी तो आग और भी बढ़ जायगी। लेकिन उस आग पकड़ने वाले सामान को, जो इस तरह की आग के चारों तरफ पड़ा या रखा हो, पानी से तर रखना चाहिए, जब तक पेट्रोल या मिट्टी का तेल ख़ुद जलकर न भस्म हो जाय या बालू या मिट्टी से उसकी आग को न दबा दिया जाय। स्काउट को बालू और मिट्टी फेंकने का अभ्यास करना चाहिए। इन्हें फेंकते समय वह उस तरफ़ रहे जिधर से हवा आग की तरफ जाती हो।

आग के एक से ज़्यादा पहलू होते हैं। उस पर उस पहलू से हमला करना चाहिए जिधर से सबसे ज़्यादा आसानी हो।

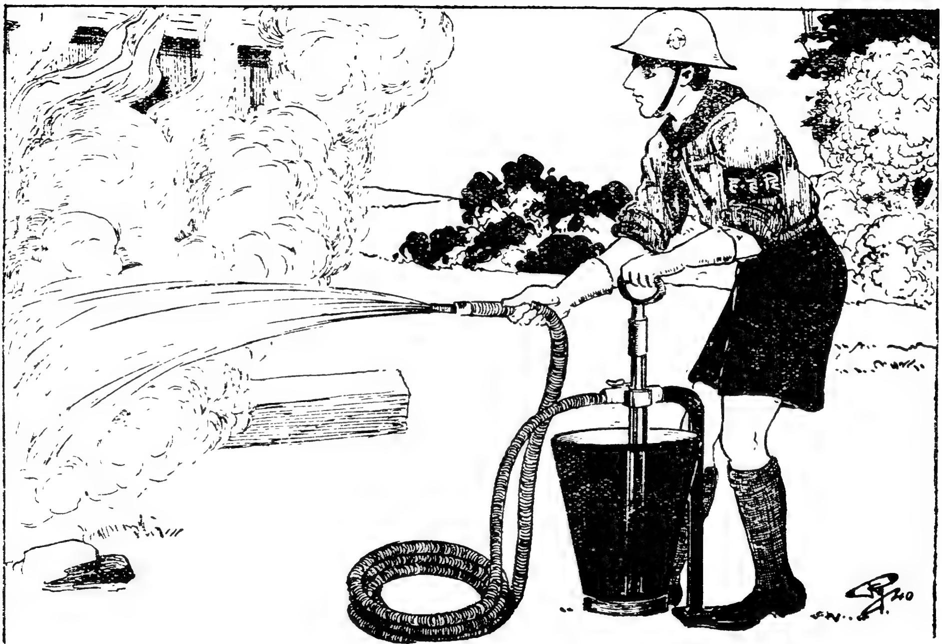
पानी

पानी फेंकने के लिए घड़े या बाल्टी या रक़ाबदार दस्ती पम्प इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

घड़ों या बाल्टियों से पानी फेंकने के लिए आदमियों की दो लाइनें पानी के मुक़ाम से आग के मुक़ाम तक बना लेनी चाहिए। एक लाइन पानी से भरे घड़ों या बाल्टियों को आग की तरफ पहुँचाएगी और दूसरी लाइन ख़ाली घड़ों या बाल्टियों को पानी की जगह की तरफ़। दस दस पंद्रह पंद्रह मिनट बाद दोनों लाइनों को अपनी ड्यूटी बदल देनी चाहिए। बाल्टियों से दूर तक पानी फेंकने के लिए बड़े अभ्यास की ज़रूरत होती है। स्काउट को इसका अभ्यास करना चाहिए।

अगर घड़े या बाल्टियाँ न मिल सकें तो लोटों ही से पानी फेंकना चाहिए।

रक़ाबदार दस्ती पम्प से पानी की धार छोड़कर आग बुझाई जा सकती है। धार को धुँआं और लपटों पर नहीं छोड़ना चाहिए। धार



चित्र नं० ३—रकाबदार पम्प

आग के उस हिस्से पर छोड़ना चाहिए जिसके सबब से शोले या धुआँ उठ रहे हों। जितने नज़दीक से धार छोड़ी जायगी उतनी ही ज्यादा वह कारगर होगी।

आग बुझाने वालों को आम तौर से तीन तरह के काम अन्जाम देने होंगे :—

(अ) आग बुझाना

(ब) माल असबाब निकालना

(स) प्राथमिक सहायता और प्राण-रक्षा

आग बुझाने वालों के चार काम होंगे--

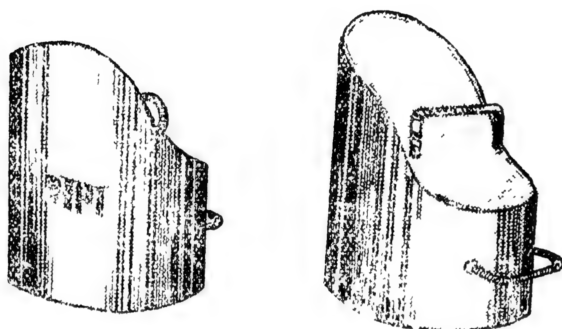
(१) घड़ों या बाल्टियों द्वारा आग का बुझाना

ऊपर बताए हुए ढंग से स्काउट की दो लाइनें पानी की जगह से आग की जगह तक बनाई जाएँगी। एक लाइन पानी से भरे हुए घड़ों या बाल्टियों को आग की तरफ़ पहुँचाएगी। जब आग पर पानी फेंक दिए जाने के बाद घड़े या बाल्टियाँ ख़ाली हो जाएँगी तब दूसरी लाइन इन्हें एक दूसरे को पास कर जलाशय तक वापिस पहुँचा देगी। इसी तरह काम जारी रहेगा। दस दस और पन्द्रह पन्द्रह मिनट के बाद दोनों लाइनें आपस में ड्यूटी बदलेंगी। जो लाइन भरे घड़े आग की तरफ़ पास कर रही थी वह दस या पन्द्रह मिनट बाद ख़ाली घड़ों और बाल्टियों को जलाशय की तरफ़ पास करेगी।

(२) मिट्टी और बालू से आग बुझाने वाली पार्टी

अगर कहीं मिट्टी के तेल या पिट्रौल में आग लगी होगी तो यह पार्टी उस पर मिट्टी या बालू डाल कर उसके जोश को ठण्डा कर देगी। मिट्टी या बालू टोकरों और बाल्टियों के ज़रिए से, पानी भरी बाल्टियों की तरह, जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है, आगे तक पहुँचाई जाएँगी। बाल्टी या टोकरों से मिट्टी को दूर तक नहीं फेंका जा सकता। उसके

फेंकने के लिए अगर नीचे दी हुई शक्ल के कनस्टर काम में लाए जाएँ तो बालू या मिट्टी दूर तक निशाने पर पहुँचाई जा सकती है।



आग बुझाने के काम में आने वाले कनस्टर—चित्र नं० ४

(३) रुकावदार दस्ती पम्प वाली पार्टी

इस पार्टी में चार आदमी रहेंगे जो अदल-बदल कर पम्प चलायेंगे, रबर के पाइप की टोंटी से आग के ऊपर धारदार पानी छोड़ेंगे और उस बाल्टी में जिसमें रुकावदार पम्प पड़ा हुआ है पानी को ला ला करके डालेंगे जिससे पम्प से निकलती हुई पानी की धार न टूटने पाए।

(४) चौथी पार्टी आग के रास्ते से जलने वाले सामान को दूर हटा देगी।

तम्बुओं को उखाड़ देगी और झोंपड़ों को उतार और गिरा कर दूर हटा देगी जिससे आग के शोले आगे न बढ़ने पाएं। जिन मकानों में आग लग गई है, अगर उनके दरवाज़े बन्द नहीं हैं तो यह पार्टी दरवाज़ों को बन्द कर देगी जिससे मकान के अन्दर हवा न पहुँच सके और हवा की कमी से शोले न भड़क सकें। अगर किसी कमरे के अन्दर आग लगी है तो यह पार्टी उस कमरे के दरवाज़ों और खिड़कियों को तब तक बन्द रखेगी जब तक कि आग से लड़ने के लिए मुनासिब और काफ़ी सामान न जुटा लिया जाय।

माल असबाब निकालने वालों के तीन काम होंगे—

(१) भीड़/भाड़ को दूर रखना

जब कहीं आग लगती है तो मुफ़्त के तमाशायी लोग भीड़ लगा लिया करते हैं। यह भीड़ ख़ुद कुछ नहीं करती धरती, मगर काम करने वालों को ऊटपटांग सलाह देने में और काम में रुकावट डालने में हमेशा आगे आना चाहती है। इस तरह की भीड़ को स्काउट अपने हाथ या डण्डों की चेन बना कर और दर्शकों की चिरौरी और ख़ुशामद कर आग से दूर हटाए रखते हैं, जिससे आग बुझाने वालों के काम में किसी तरह की अड़चन न पड़े।

(२) माल और असबाब का पहरा

जब कहीं आग लगती है तो चोर, उचक्कों और बदमाशों को हाथ साफ़ करने का अच्छा मौक़ा मिलता है। इन हज़रात से उस माल की हिफ़ाज़त करने के लिए, जो जलते हुए मकानों से या उन मकानों से जिनके जल जाने का अन्देशा है, बाहर निकाला गया है, बड़ी चौकसी करनी पड़ती है। इस काम के लिए स्काउट की एक पार्टी अलाहिदा तैनात कर दी जाती है।

(३) माल असबाब निकालने वाली पार्टी

इस पार्टी का फ़र्ज़ होता है कि वह जलते हुए मकानों के अन्दर या उन मकानों के अन्दर जिनमें आग लग जाने का डर है जाए और माल-असबाब को बाहर निकाल कर लाए। सामान को बाहर लाने के लिए इस पार्टी को बड़ी अक़्लमन्दी से काम करना होता है। यह पार्टी फ़ौरन तै करती है कि किस सामान को पहले निकाला जाय और किसको बाद में। सामान के इन्तिख़ाब में ध्यान रक्खा जाता है कि रुपए-पैसे और बेशक़ीमती सामान को सबसे पहले निकाला जाय, और अगर मालिक मकान मौजूद है तो उसको सुपुर्दगी में रखा जाय।

प्राथमिक सहायता और प्राण-रक्षा--

जिन लोगों को प्राण-रक्षक पार्टी जलते हुए मकानों से या धुआँ से भरे हुए कमरों से निकालेगी उन्हें प्राथमिक सहायक पार्टी फ़र्स्ट एड (First Aid) पहुँचाएगी। जो लोग जल गए होंगे उनका जले का इलाज होगा और जो धुएं में से बेहोश निकाले जायंगे उनको बनावटी सांस दी जायगी और गर्मी पहुँचाई जायगी।

जले का इलाज—

१. जले अंग पर से कपड़ों को होशियारी से उतार लो। अगर कपड़ा चिपक गया है तो उसे उखाड़ने की कोशिश मत करो। कपड़े को चारों तरफ से क़ैंची से काट ज़ख़्म पर चिपका रहने दो।

२. अगर आबले उठ आए हैं तो उन्हें हरगिज़ न तोड़ो और न सुई चुभोकर उनका पानी निकालो। जहाँ तक हो सके उन्हें साबित रखो।

३. जले हुए हिस्से पर हवा न लगने दो। जब तक मरहम पट्टी का बन्दोबस्त हो, जले हिस्से को गरम पानी में डुबोए रखो। पानी उतना ही गरम हो जितना शरीर का तापमान होता है। उंगली या खुली कोहनी को पानी में डाल उसकी गर्मी का अंदाज़ा करो। जली जगह को साफ़ सुथरी धुनी हुई रुई से, या साफ़ मुलायम कपड़े से ढक कर बांध दो। ज़ख़्म पर तेल या घी मत लगाओ।

४. ज़ख़्म पर टैनिक एसिड (Tannic Acid) का लेप लगाकर उसे ख़ुश्क पट्टी बांध कर ढक दो। धुनी हुई साफ़ रुई की गद्दी बनाकर या लिंट (Lint) के एक टुकड़े को दोबर करके ज़ख़्म पर रखो और तब साफ़-सुथरे रूमाल से बांध दो।

५. जले हिस्से को गलपट्टी में रख कर सहारा दो।

६. सदमे से हिफ़ाज़त करो।

सदमे से हिफ़ाज़त—

१ मरीज़ को मुलायम बिस्तरे पर चित लिटाओ।

२. गर्दन, सीने और कमर पर के कपड़ों को ढीला कर दो जिससे मरीज़ को सांस लेने में आसानी हो।

३. सदमे में बदन की गर्मी घटने लगती है। इसलिए मरीज़ के बदन को गरम रखने के लिए उसे रज़ाई या कम्बलों से ढक दो। गरम पानी की बोतलों से भी शरीर को गर्मी पहुंचती है, मगर बोतलें रखते वक्त उन्हें कपड़े में लपेट कर रखो जिससे बोतल का गर्म शीशा बदन से न छूने पाए।

४. गरम चीज़ें पिलाओ। अगर गरम चीज़ें न मिल सकें तो मरीज़ को, अगर वह घूँट सकता है, ठंडे पानी को चुस्की के रूप में पिलाओ।

नोट—अगर टैनिक एसिड की जेली न मिल सके तो लिंट या साफ़ कपड़े का दो इंच चौड़ा फाया बना और सोडा बाईकार्बोनेट के पानी को भिगोकर ज़ख़्म पर डालो। खूब उबले हुए पानी में जिसका वज़न एक पाइंट हो, दो चाय पीने वाले चमचे भर खाने वाले सोडे को मिला कर सोडा बाइकार्बोनेट का पानी तैयार होगा। अगर यह भी न हो सके तो गहरी गरम चाय में फाए को भिगो कर ज़ख़्म पर डालो।

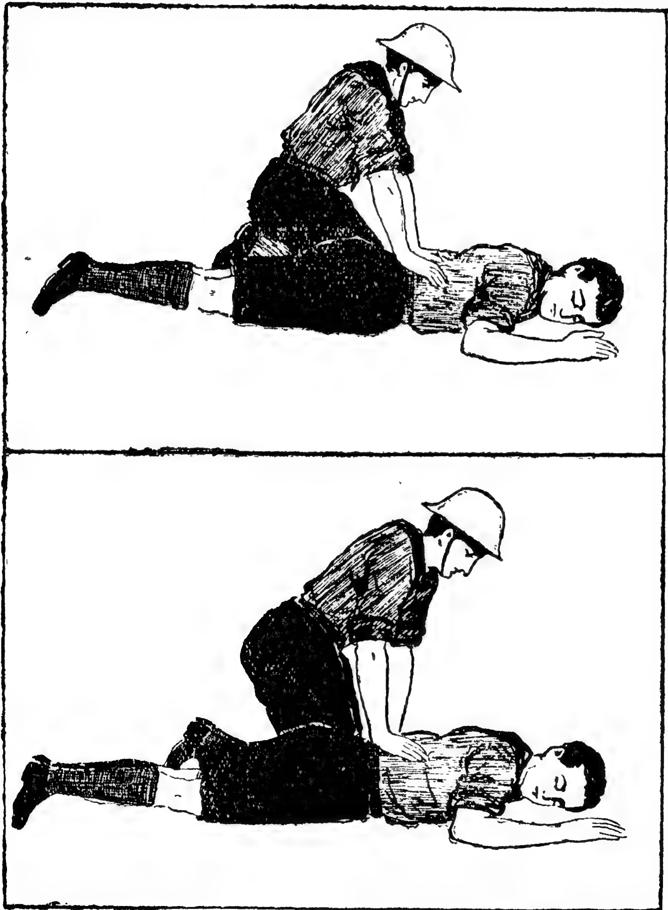
बनावटी सांस—

बनावटी सांस देने में विलम्ब नहीं करना चाहिए। गर्दन, सीने और कमर पर के कपड़े ढीले ज़रूर कर देना चाहिए, मगर कपड़े उतारने में समय न गँवाना चाहिए। अगर मरीज़ कपड़े पहने रहेगा तो इनसे उसके बदन को गरमी पहुँचाने में मदद मिलेगी।

मरीज़ को पट लिटा दिया जाय। उसकी बाज़ुओं को सर की तरफ़ फैला कर सर को एक तरफ़ झुका दिया जाय। मरीज़ की नाक और मुंह को साफ़ करके उसके एक तरफ़ घुटनों के बल बैठा जाय।

मरीज़ की पीठ के नीचे वाले हिस्से पर अपने दोनों हाथों को इस तरह रखो कि अंगूठे रीढ़ की हड्डी पर रहें और उगलियां फैली पर मिली हुई सबसे नीची पसलियों पर।

अपने बदन को आगे झुकाकर हाथों द्वारा मरीज़ की पसलियों पर तीन सेकंड तक दबाव डालो और दो सेकंड के लिए पोछे हटकर



बनावटी श्वास-चित्र नं० ५ अ

अपनी पहली पोज़ीशन पर आ जाओ। इस क्रिया को ३ और २ सेकंड के प्रपोर्शन का ध्यान रखकर बराबर करते रहो।

बनावटी सांस कभी कभी तीन-तीन चार-चार घंटे तक देना पड़ता है तब कहीं मरीज़ में जान आने लगती है। इसलिए जब तक डाक्टर मना न कर दे बनावटी सांस देना जारी रखना चाहिए। एक ही आदमी इस काम को इतनी देर तक जारी नहीं रख सकता। इसलिए स्काउट अदल-बदल कर काम करते हैं मगर बड़ा ख़याल रखते हैं कि सांस देने की क्रिया का तार न टूटने पाए।

बनावटी सांस के साथ ही साथ मरीज़ में गरमी और ख़ून के दौरान को बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है। मरीज़ की जांघों और बग़लों के बीच में और पैरों के पास गरम पानी की बोतलें रखी जाती हैं और उसे गर्म कपड़ों से ढक दिया जाता है। इन सबके करने में बनावटी सांस की क्रिया में विघ्न नहीं पड़ना चाहिये।

स्पेन में सिविल वार के दौरान में शहर बार्सीलोना पर ब्यालीस घंटे में तेरह हवाई हमले हुए। इन हमलों में तीन हज़ार आदमी मरे और पांच हज़ार बुरी तरह घायल हुए। मगर बीस हज़ार आदमियों का सदमे और दूसरे कारणो से दम घुट गया और उन्हें बनावटी सांस देनी पड़ी। इससे प्रतीत हो जायगा कि बनावटी सांस की क्रिया को जानना कितना ज़रूरी है। हिन्दुस्तान स्काउट असोसिएशन इस क्रिया की जानकारी पर बड़ा जोर देता है।

प्राण-रक्षा—

प्राण रक्षक अपनी जान को हथेली पर रख कर जलते हुए मकानों में और धुआँ भरे कमरों में घुसेंगे और उनमें फँसे आदमियों और जानवरों को बाहर निकाल लाने का अथक परिश्रम करेंगे।

प्राण-रक्षक दल

प्राण-रक्षक दल को तीन समस्याएँ हल करनी पड़ेंगी :—

१. पहुंच--आग या धुआँ में फँसे आदमियों या जानवरों तक कैसे पहुँचा जाय

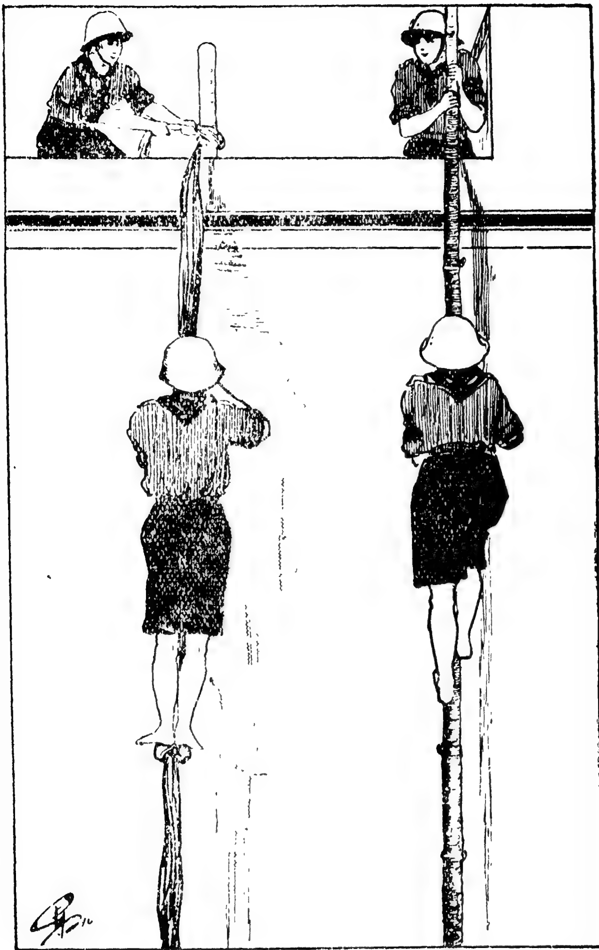
२. रक्षा--उन्हें किस तरह बचाया जाय ; और

३. भाग-बचाव--अगर खुद मुसीबत में फँस जायँ तो अपनी कैसे रक्षा करें।

पहुंच—

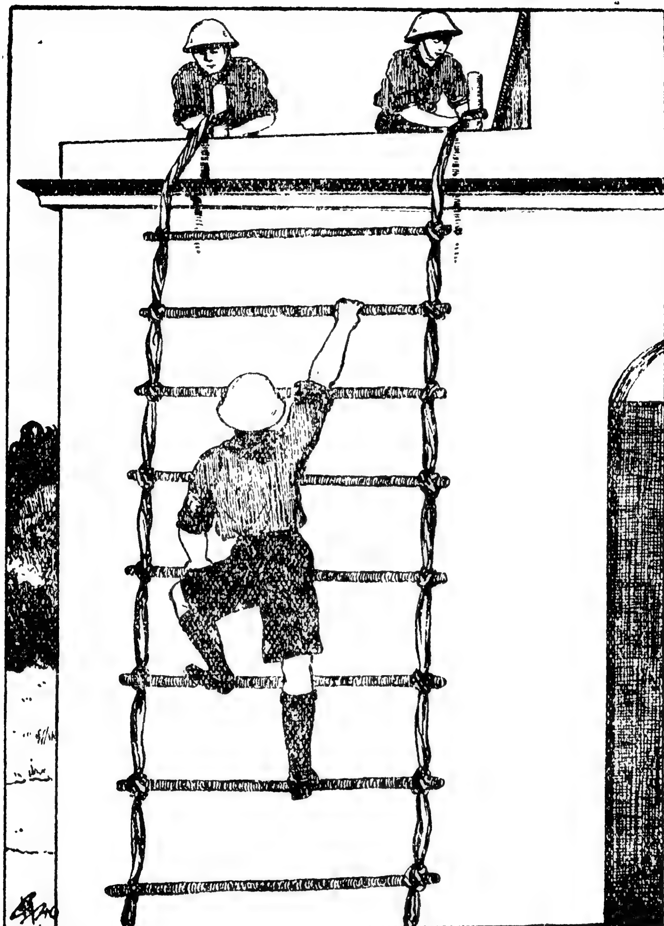
अगर आग ने दरवाजों को नहीं घेर लिया है तो मकान के अंदर जाने में दिक़्क़त न होगी। अगर आग फैल जाने के सबब से दरवाज़ों में होकर जाना नामुमकिन हो गया है तो कुछ तरकीबों से काम लिया जायगा।

१—अगर मकान में फँसे आदमियों में से कोई आदमी होश में है तो उसके पास एक पतली रस्सी का सिरा फेंक दिया जायगा। इसके दूसरे सिरे से एक इतनी मोटी रस्सी का सिरा, जो आदमी के बोझे को सहार लेगी, बाँध दिया जायगा। छत पर खड़ा आदमी मोटी रस्सी के सिरे को ऊपर खींच कर किसी खम्भे या दूसरी मज़बूत चीज़ से बाँध देगा और प्राण-रक्षक मकान की छत पर पहुँच जायगा।



साफ़ा या बाँस के सहारे छत पर जाना—चित्र नं० ५

२. अगर सीढ़ी मौजूद हुई तो दिक़्क़त आसानी से हल हो जायगी; नहीं तो स्काउट, सोटों और साफ़ों या रस्सियों से फ़ौरन नसेनी बना मकान के ऊपर पहुँच जायंगे। इस तरह की नसेनी बनाने का अभ्यास किया जाता है। क़वायद जानने वाले स्काउट १० सेकंड में सीढ़ी तैयार कर लेते है।

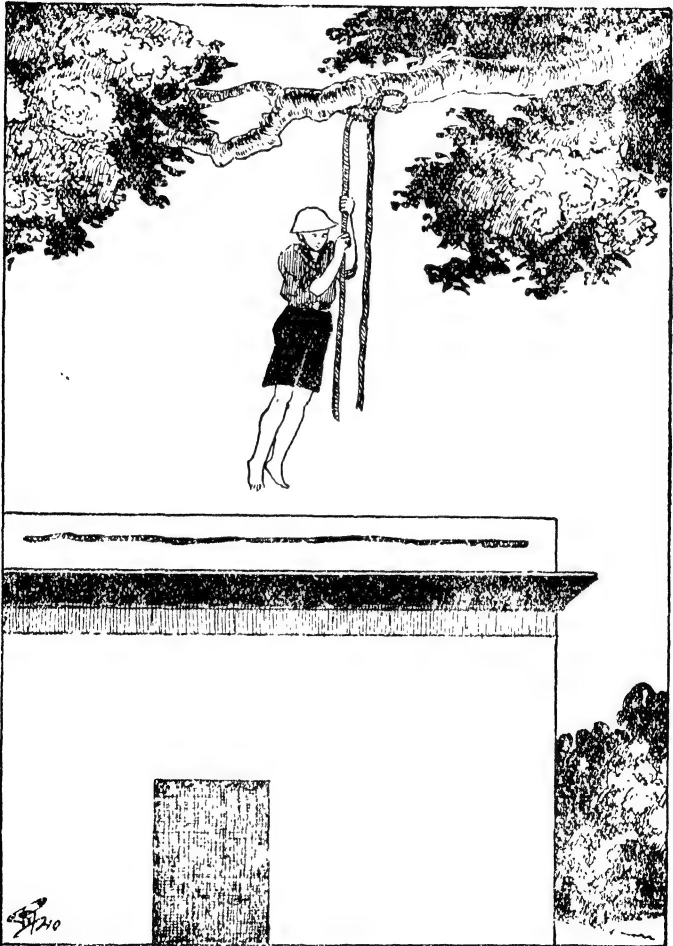


निसेनी—चित्र नं० ६

३. अगर नसेनी बनाने का सामान नहीं है और न छत के ऊपर ही कोई ऐसा आदमी है जो रस्सी को खींचे और उसे कहीं मज़बूती से बांधे तो स्काउट बल्ली या लम्बे बांस के सहारे मकान की छत पर पहुँच जायगा।

४. अगर बद्क़िस्मती से लम्बा बांस या बल्ली न मिल सकी तो स्काउट हाथ पर हाथ रख कर न खड़ा हो जायगा। वह फ़ौरन देखेगा

कि किसी पेड़ की शाख मकान के ऊपर गई है या झुकी हुई है। अगर ऐसा है तो वह अपनी खास रस्सी को लेकर पेड़ पर चढ़कर उस शाख पर रस्सी से खिंच-खुलनी गांठ लगाकर चुस्त सिरे के सहारे मकान की छत पर उतर जायगा।



खिँचखुलनी गाँठ से मकान की छत पर जाना—चित्र नं० ७

आग में काम करने वाले स्काउट एक ख़ास लम्बी रस्सी रखते हैं। यह आधी लाल रंग से रंगी होती है और दूसरी आधी हरे रंग से। इस रस्सी से खिंच-खुलनी गांठ लगाते हैं। गांठ लगाने में फंदे इस तरह लगाए जाते हैं कि हरा सिरा इतना मज़बूत जकड़ जाता है कि स्काउट उसके सहारे ब-आसानी उतर-चढ़ सकता है।

इस गांठ का नाम खिंच-खुलनी क्यों पड़ा। मानिए, स्काउट रस्सी के सहारे छत पर उतर गया और वहां जाकर बेहोश आदमियों को रस्सी के सहारे नीचे उतारने की ज़रूरत पड़ी तो वह रस्सी के लाल सिरे पर ज़ोर से झटका देगा। गांठ के फंदे खुल जायंगे और रस्सी नीचे गिर जायगी।

हरे हिस्से को "चुस्त" कहते हैं क्योंकि वह ज़ोर पड़ने पर खुलता नहीं; और लाल हिस्से को "सुस्त" कहते हैं क्योंकि वह ज़ोर पड़ने पर या झटका देने से खुल जाता है।

चुस्त और सुस्त हिस्सों के इस्तेमाल में ख़बरदारी करनी चाहिए। अगर ग़लती या उजलत में आकार हरे सिरे की बजाय लाल सिरे से काम लिया गया तो प्राण-रक्षक को "लेने के बजाय देना" पड़ जायगा।

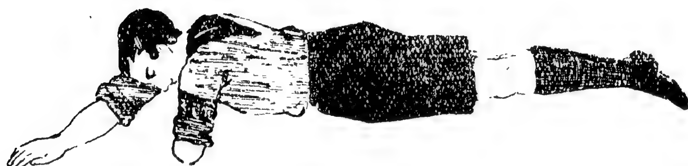
५. जब स्काउट किसी धुआं से भरे कमरे में जाता है तो वह एक लम्बी पतली रस्सी के सिरे को अपनी पेटी या कमर से बाँध लेता है। इस रस्सी की मदद से वह हलके और ज़ोर के झटके देकर बाहर दूसरे सिरे को पकड़े हुए स्काउट को सिगनलिंग (इशारों से ख़बर पहुँचाता है) करता है। इस रस्सी के सहारे स्काउट को बाहर वापिस आने में मदद मिलती है। या अंदर जाकर अगर स्काउट मुसीबत में गिरफ़्तार हो गया है तो उसके दूसरे साथी इस रस्सी के सहारे धुआं-धाड़ में भी अपने मुसीबत में फँसे कामरेड के पास आसानी से पहुँच जाते हैं।

६. कारबन मानोक्साइड एक बहुत ख़तरनाक गैस होती है। यह गैस अग्निकांड में प्रायः मिलती है। इसका पता चलना मुश्किल हो जाता है। आग में प्राणों की रक्षा करने वाले स्काउट अपने साथ में

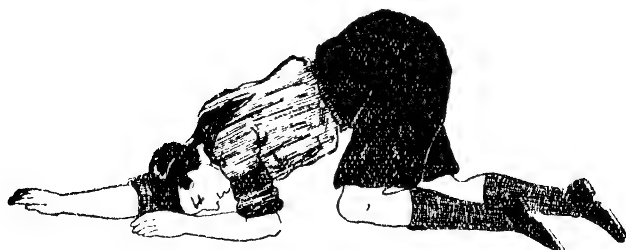
पिंजड़े में बंद चूहों या कनारी पक्षियों को ले जाते हैं। इन पर इस विषैली गैस का असर बहुत जल्द होता है। इन्हें मूर्छित होते देख स्काउट सजग हो जाता है और तब उस वायुमंडल से हट जाता है।

प्राण-रक्षक को कैसे जाना चाहिए—

अगर शोलों के नज़दीक से या हलकी लपटों में होकर जाना है तो प्राण-रक्षक अपने बदन पर कम्बल या दरी को भिगोकर लपेट लेते हैं और नाक के ऊपर सिरका और पानी भीगा रूमाल बांध कर ज़मीन से सरको मिलाए हुए बिल्ली की तरह चुपके-चुपके या कीड़े-मकोड़ों की तरह रेंगते-रेंगते कमरों या मकानों में आगे बढ़ते हैं। ज़मीन के नज़दीक न उतना धुआं रहता है न उतनी आंच। इसीलिए प्राण-रक्षक अपने सर को ज़मीन से सटाए हुए आगे बढ़ता या पीछे हटता है।



बिल्ली की चाल चलना—चित्र नं० ८



घसीट कर चलना—चित्र नं० ९

कमरों में जाते समय प्राण-रक्षक दीवारों से मिला हुआ चलता है। कारण कि आग की वजह से अगर छत कमज़ोर भी हो गई हो तब भी

दीवारों के नजदीक आदमी का बोझा सहारने भर के लिए काफी मज़बूत रहेगी। इसके अलावा दीवार में इलमारियां, खिड़किया, खूटियां इत्यादि होती हैं। अगर कहीं छत टूट भी गई तो वह इनका सहारा लेकर बच सकता है।

अगर प्राण-रक्षक को ज़ीने से उतरना हो तो वह अपने पैरों को आगे कर खिसकता है।

अगर आदमियों के लिए तलाशी करना हो तो प्राण-रक्षक स्काउट सब से पहले ऊपर के खंड से तलाशी शुरू करता है और नीचे खंडों की तरफ़ आता- जाता है। कारण आग की लपटें ऊपर उठती हैं। अगर नीचे से तलाशी की जाय तो सम्भव है जब तक ऊपर जाया जाय लपटें वहां तक पहुँच जांय।

दरवाज़ों का खोलना—

जिन बंद कमरों में धुआं भरा हो उनके दरवाज़ों को इकबारगी नहीं खोल देना चाहिये। पहले जिधर दरवाज़ा खुलता है उधर दरवाज़े से तीन या चार इंच के फ़ासले पर अपने एक पैर को जमा दो तब दरवाज़े को तीन या चार इंच खोलो। जो गैस धुआं में बनती है उसका दबाव दरवाज़ों पर पड़ता है। अगर पैर की अड़ान न लगाई जाय तो मुमकिन है कि दरवाज़ा इकबारगी खुल जाय और कमरे की लपटें, धुआं और गरम हवा एक साथ में निकल कर प्राण-रक्षक का काम तमाम कर दें।

प्राण-रक्षा—

आग या धुआं में फंसे हुए आदमियों को निकाल लाने के लिए जो जुगतें स्काउट करते हैं उनका ज़िक्र नीचे किया जाता है।

फ़ायर मैन्स लिफ़्ट

(Fireman's lift)—मरीज़ को पट कर दो और उसके हाथों को उसके बदन से लगा दो। अपने दोनों घुटने के बल ज़मीन पर इस

तरह बैठो कि मरीज़ का सर उनके बीच में आ जाय। हथेलियां ऊपर की तरफ़ किए हुए अपने हाथों को मरीज़ की बग़लों के नीचे डाल कर उसको उसके घुटनों के बल उठाओ। अपने हाथों को धीरे-धीरे नीचे ले आओ, यहां तक कि वे मरीज़की कमर के इर्द-गिर्द आ जायँ। उसके बाद कमर को हाथों से पकड़ कर मरीज़ को उठा, उसके पांव के बल खड़ा कर दो। मरीज़ की दाहिनी कलाई अपने बांएं हाथ से पकड़ कर उसका दाहिना हाथ अपनी गर्दन के ऊपर डाल दो। इसके बाद इतना झुक जाओ कि आपका खवा उसके दाहिने चड्ढे के सामने आ जाय। अब अपना दाहिना हाथ उसकी रानों के गिर्द ले जाकर उसका बोझ ठीक तरीक़े से अपनी पीठ पर लाद लो, बाद को मरीज़ की दाहिनी कलाई अपने दाहिने हाथ से पकड़ कर खड़े हो जाओ।



फ़ायर मैन्स लिफ़्ट चित्र १० (अ)



फ़ायर मैन्स लिफ़्ट चित्र १० (ब)

मरीज़ को कुरसी पर बिठा कर या उसकी पीठ दीवार से लगा कर ऊपर कही तरकीब से उठा लिया जाय।

फायरमैन्स ड्रैग (Fireman's drag)—मरीज़ को चित्त करके उसकी कलाइयों को एक रूमाल से बाँध दो। अपने सर को उसके बाज़ुओं के बीच में डाल कर चारों हाथ-पैर के बल उसे खींच ले जाओ।

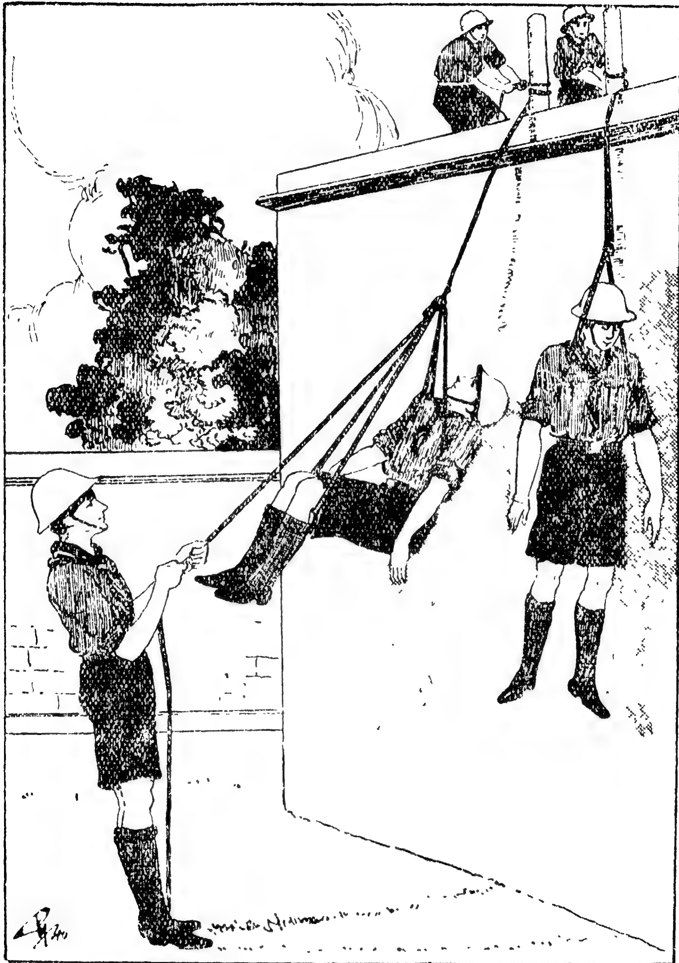


फ़ायर मैन्स ड्रैग–चित्र नं० ११ (अ)



फ़ायर मैन्स ड्रैग–चित्र नं० ११ (ब)

बोलिन (Bowline) **लगाकर मरीज़ को खींचना**—मरीज़ की पीठ के नीचे बगलों के बीच में से रस्सी को निकाल कर सर से ऊपर की तरफ़ एक बोलिन लगा दो। बोलिन के ऊपर मरीज़ के बचाव और सहारे के लिये एक तकिया या साफ़ा रख दो। अपनी पीठ मरीज़ के सर की तरफ़ फेर कर अपनी गर्दन के इर्द-गिर्द उसी रस्सी के दूसरे सिरे पर एक बो लाइन गाँठ लगा लो और अपने चारों हाथ पाँव पर चल कर मरीज़ को घसीट ले जाओ।



बोलिन और कुर्सी गाँठ से मरीज़ को खींचना--चित्र नं० १२

कुर्सी गाँठ (Chair knot)—स्काउट एक लम्बी रस्सी में उस गाँठ को लगाते हैं जिसे स्काउट-विद्या में कुर्सी गाँठ कहते हैं। इस गाँठ में दो फन्दे बांधते हैं—एक छोटा एक बड़ा। छोटा फन्दा मरीज़ की

पीठ पर डाल बग़लों के नीचे से सामने को निकाल दिया जाता है और बड़े फन्दे को पैरों के नीचे से निकाल घुटनों के नीचे ले आया जाता है। इस तरह फन्दों में फँसा मरीज़ कुर्सी पर बैठा हुआ मालूम होता है। रस्सी के एक सिरे को नीचे खड़े स्काउट के पास फेंक दिया जाता है। दूसरा सिरा ऊपर खड़े स्काउट के हाथ में रहता है। मरीज़ को कुर्सी गांठ पर बिठा कर नीचे की तरफ़ धीरे धीरे खिसकाया जाता है। नीचे खड़े स्काउट रस्सी के सिरों को अपनी तरफ़ खींचे रहते हैं जिससे मरीज़ दीवार से नहीं टकराने पाता।

बोलिन से मरीज़ को नीचे उतारना --

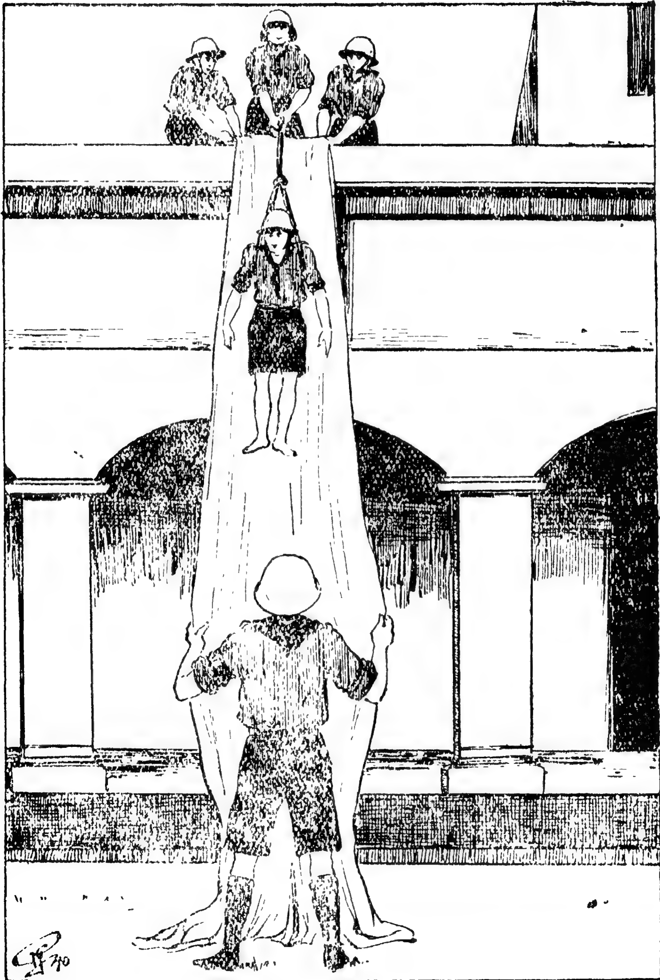
ऊपर की तसवीर को देखने से पता चल जायगा कि किसी बेहोश मरीज़ को बोलिन गांठ के सहारे कैसे उतारा जाता है।

कुर्सी गांठ या बोलिन गांठ द्वारा मरीज़ को नीचे उतारते वक़्त दीवार की मुंडेर या खिड़की की चौखट के पास टाट, दरी या कम्बल रख कर तब उस पर रस्सी रखनी चाहिये। इस तरकीब से मुंडेर या चौखट की धारदार रगड़ से रस्सी कटने नहीं पाती। रस्सी के ऊपर वाले सिरे से किसी खम्भे, चारपाई की पट्टी इत्यादि के इर्द-गिर्द एक फन्दा लगा लेना चाहिये। इस फन्दे के सहारे मरज़ी के मुताबिक़ रस्सी को ढील दी जा सकेगी और हाथ भी रस्सी की रगड़ से कटने से बच जायंगे।

पेराशूट—

बेहोश मरीज़ों को उतारने के लिये फ़ायर ब्रिगेड वाले एक लम्बी थैली का इस्तेमाल करते हैं और उसका नाम पेराशूट होता है। हिन्दुस्तान स्काउट एक कामनिकालू पेराशूट बना लेते हैं। तीन चार धोतियों या साफ़ों को एक दूसरे के ऊपर बिछा देते हैं। इनके एक खुले हुये सिरे को छत पर बैठे स्काउट अपने हाथों से मज़बूती से पकड़ लेते हैं और दूसरे खुले हुए सिरे को नीचे खड़े स्काउट अपनी तरफ़ पकड़े हुए खींचे रहते हैं। मरीज़ की बग़लों के नीचे से एक पतली रस्सी के सिरे को लाकर सर के पीछे एक बोलिन गांठ लगा देते हैं तब मरीज़ को

साफ़ों के ऊपर चित्त लिटा कर रस्सी को धीरे धीरे ढील देकर नीचे उतारते हैं।



पैराशूट—चित्र नं० १२

बेहोश आदमी को ज़ीने से नीचे उतारना--

अगर किसी बेहोश आदमी को ज़ीने से नीचे उतारना हो तो उसे ज़ीने की तरफ़ सर करके चित लिटा दो। अपने हाथों को उसकी बग़ल के नीचे डालो और उसके सर को जहाँ पर बाज़ू मुड़ती हैं वहाँ पर रख लो। इस तरह से उसको धीरे धीरे नीचे खिसका लाओ।

भाग बचना--

अगर प्राण-रक्षक दूसरे की रक्षा करने के लिये जाय और इस बीच में आग इतनी बढ़ जाय कि उसे अपनी ख़ुद रक्षा करना पड़ जाय तो वह नीचे दी हुई तरकीबों से काम लेता है:—

खिंच-खुलनी गांठ के सहारे वह पेड़ की शाख़ पर चढ़ कर नीचे उतर आता है।

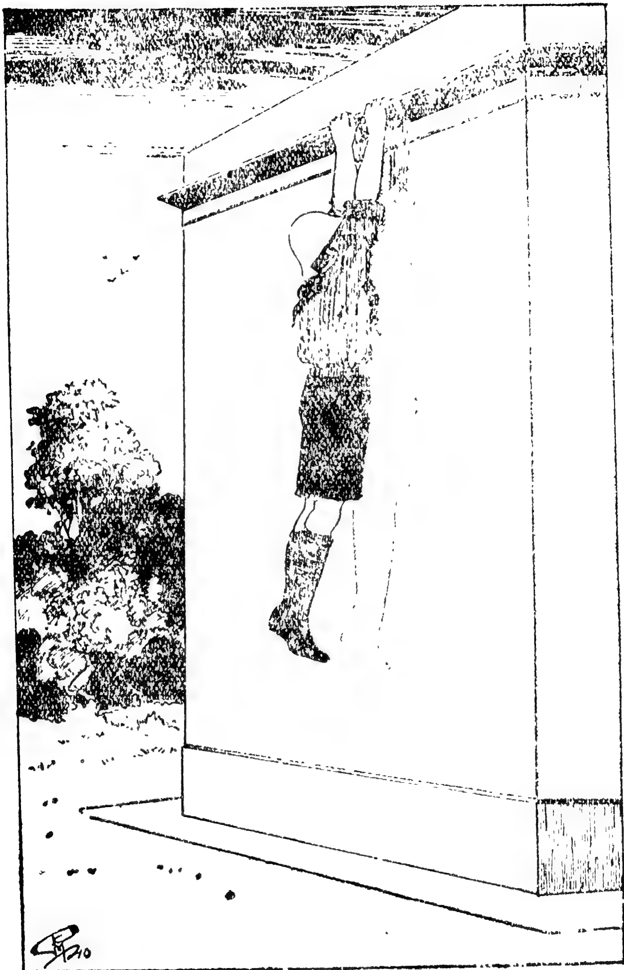
चद्दरों या धोतियों को फाड़ वह रस्सी बना लेता और उसके सहारे नीचे उतर आता है।

अगर कोई दूसरी तरकीब नजर नहीं आती तो वह दीवार या खिड़की को अपने हाथों से पकड़ पूरा लम्बा लम्बा लटक जाता है (चित्र १४, पृष्ठ ३२) तब पंजों के बल ज़मीन पर कूद पड़ता है। इस तरकीब से उस ऊंचाई में जहाँ से वह कूदता है क़रीब करीब सात फ़ीट की कमी हो जाती है।

कवर पर दी हुई और पृष्ठ ३३ की तस्वीरों को देखने से पता चलेगा कि प्राण रक्षक जम्पिग शीट (Jumping sheet) और हैन्ड कारपेट (Hand carpet) पर कूद कर किस तरह अपनी प्राण रक्षा करते हैं।

जम्पिग शीट

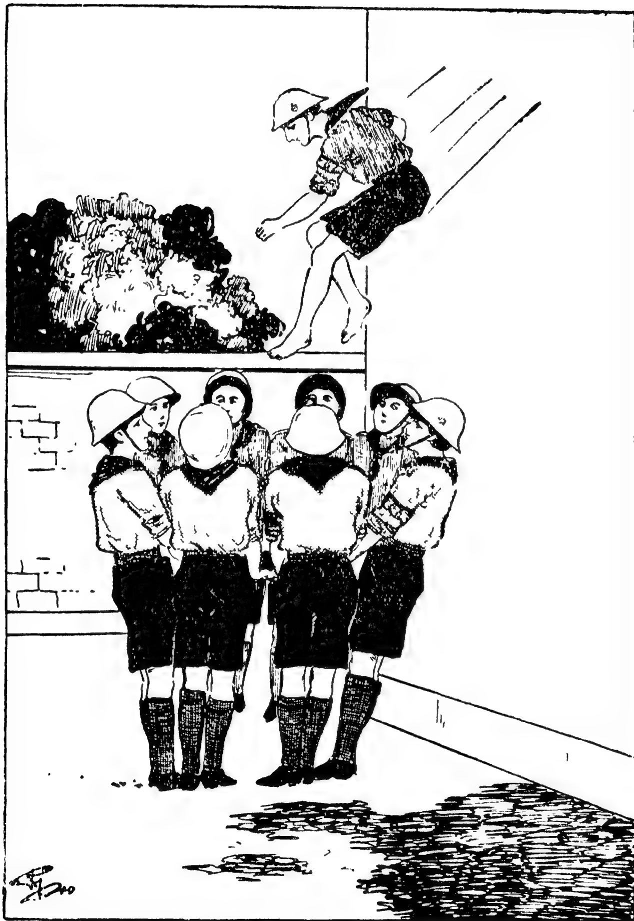
किसी दरी, पल्ली या लम्बी चादर को दोहरा तेहरा कर नीचे खड़े हुए स्काउट उसके कोनों और बीच के हिस्सों को मज़बूती से पकड़ लेते हैं। जो स्काउट जम्पिग शीट को पकड़े हैं वह अपनी टांगों को



दीवार पकड़ कर कूदना—चित्र नं० १४

सीधा और बदन को पीछे की तरफ झुकाये हुए शीट को मजबूती से पकड़े रहेंगें। कूदने वाला स्काउट छलांग मारकर नहीं बल्कि धीरे से शीट के ऊपर टपक पड़ेगा। (कवर का चित्र देखिये)

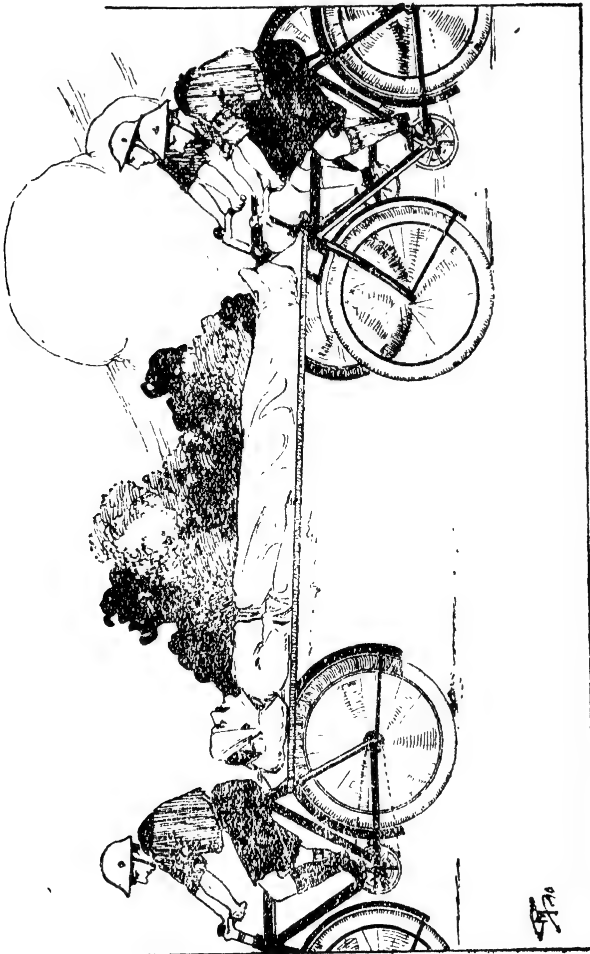
आठ दस स्काउट घेरे में पास पास खड़े होकर आमने सामने अपने हाथों को जोड़ लेते हैं। जुड़े हुए हाथों के ऊपर कम्बल साफ़े या चदरें रख दी जाती हैं। हाथों से इस तरह बनी हुई कारपेट पर प्राण-रक्षक स्काउट ऊपर से कूद पड़ता है।



हैंड कारपेट—चित्र नं० १५

स्ट्रेचर (stretcher)

जब असली स्ट्रेचर दस्तयाब नहीं होता तो स्काउट अपने साफ़ों कपड़ों और डंडों से स्ट्रेचर बना लेते हैं और तीन बाइसिकलों और सोटों की मदद से काम निकालू अम्ब्यूलैंस कार बना लेते हैं, जैसा नीचे के चित्र में दिया हुआ है।



कामनिकालू एम्बुलेंसकार या साइकिल स्ट्रेचर—चित्र नं० २६

पहचान के लिये निशान--

जब फ़ायर अलार्म बजता है तो जो जहाँ जिस हालत में हो उसी में परेड पर फ़ाल-इन होना होता है। स्काउट को पहिले से मालूम रहता है कि अग्निकांड में उसकी क्या ड्यूटी होगी। ड्यूटी के विचार से स्काउट अलग अलग दलों में खड़े होते हैं। जल्दी से पता चल जाय कि किस दल वाले कहाँ खड़े हैं स्काउट्स को पहचान के लिए अपने अपने स्कार्फ़ या तौलिया या रूमाल का इस्तेमाल करना पड़ता है।

(१) आग बुझाने वाला दल स्कार्फ़, तौलिया या रूमाल को अपने सर पर बांधता है।

(२) माल-असबाब की रक्षा करने वाला दल स्कार्फ़, तौलिया या रूमाल को अपने गले से बाँधता है।

(३) प्राथमिक सहायक और प्राण-रक्षक दल अपने स्कार्फ़, तौलिया या रूमाल को बांई भुजा पर बाँधता है।

कपड़ों में आग लगना--

अगर अपने कपड़ों में आग लग जाय तो फ़ौरन ज़मीन पर लेट कर लुढ़कना-पुढ़कना चाहिए। भागना हरगिज़ न चाहिये। अगर दूसरे के कपड़ों में आग लग गई है तो अपने सामने दरी या कम्बल को लगा कर उसे टंगड़ी मार कर गिरा देना चाहिये और उसके ऊपर दरी कम्बल डाल लुढ़काना-पुढ़काना चाहिए।

जानवरों की प्राण-रक्षा—

जानवरों की आखों पर कपड़ा बाँध कर उन्हें बाहर हंका देना चाहिये या उन पर सवार होकर उन्हें बाहर निकाल लाना चाहिये।

स्काउट को जिस हिस्से में आग लगी हो उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिये। ख़ास कर हाइड्रन्टस (Hydrants), कुओं, तालाबों या दूसरे जलाशयों की।

साधारण जनता का कर्तव्य

(१) अगर अग्नि बाण से आग लग गई है तो उसे क़ाबू के बाहर नहीं होने देना चाहिए।

(२) हर मकान में बालू या मिट्टी और पानी काफ़ी मात्रा में इकट्ठा रहना चाहिये।

(३) किसी भी कारण से आग लग गई हो उसे जल्दी से जल्दी जहां की तहां बुझा देना चाहिये। फ़ौरन की कार्रवाई से नुक़सान भी नहीं होने पाता और किसी क़िस्म का ख़तरा भी नहीं।

(४) अगर परदों में आग लग जाय तो उन्हें फाड़ कर फेंक देना और पैरों से रौंद देना चाहिए।

(५) अगर आग के शोले ऊपर को बढ़ रहे हैं तो कमरे को बन्द कर उसके अन्दर छिप जाना चाहिये। ज़ीने पर या दूसरे रास्तों में हरगिज़ न खड़ा होना चाहिये।

(६) इतमीनान कर लेना चाहिये कि मकान में बिजली के तार वग़ैरा, गैस के ब्रेकेट और लैम्प ख़ूब कील-कांटे से दुरुस्त हैं या नहीं। खुली हुई रोशनी या आग के नज़दीक किसी परदे या दूसरी चीज़ को नहीं लटकते रहना चाहिये।

आग को रोकने की तरकीबें

(१) जलती हुई दियासलाई को फेंकने के पहिले उसे अच्छी तरह बुझा कर दो टुकड़ों में तोड़ दो।

(२) आग पकड़ने वाली चीज़ों के नज़दीक बीड़ी सिगरेट न पियो। बिस्तरे पर या मोटर घर में भी हुक़्क़ा तम्बाकू नहीं पीना चाहिये।

(३) सिगरेट या बीड़ी के जलते सिरे को फेंकने से पहले अच्छी तरह बुझा दो।

(४) काग़ज़, सूखे पत्ते आदि को कभी इधर उधर न फैला रहने दो अगर इनसे एक छोटी सी चिनगारी भी छू जायगी तो आग लग सकती है । ।

(५) पेट्रोल को छूने छेड़ने और स्टोर करने में बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये ।

(६) सब्ज़ी या दाल में तड़कन देते वक़्त या कढ़ाई में पूरी उतारते या सब्ज़ी को छोड़ने के समय तेल या घी को ज़्यादा मत गरम होने दो । अगर घी या तेल में आग लगे तो उस पर पानी न डालो उसे फ़ौरन थाली या दूसरे बर्तन से ढक दो ।

(७) दियासलाई को बच्चों की पहुँच से दूर रक्खो । इन्हें ऐसी जगह रखो जहाँ से इन्हें चूहे न उठा ले जायं ।

(८) कपड़ों या बिस्तरों को आग के सामने रख कर मत सुखाओ ।

(९) जहाँ तेल रखा हो वहाँ के फ़र्श पर तेल मत पड़ा रहने दो ।

(१०) हर एक को मालूम होना चाहिये कि फ़ायरब्रिगेड को किस प्रकार बुलाना चाहिये ।

(११) अगर कड़ुवे तेल का चिराग़ इस्तेमाल किया जाय तो उसे रात को जलता हुआ न छोड़ा जाय, वरना चूहे बत्ती को खींच ले जांयगे और मकान में आग लगा देंगे । बत्ती से फूल झड़ करके भी आग लग सकती है, लड़कों को आग में लकड़ी या सिरकी जला कर खेल न करना चाहिए ।

(१२) छोटे छोटे बच्चों को मिट्टी के तेल की कुप्पी ले जाने से और स्टोव जलाने से मना करना चाहिए ।

(१३) जहाँ मिट्टी का तेल, पेट्रौल या स्पिरिट रखी हो वहाँ पर जलती हुई रोशनी या आग को नहीं छोड़ना चाहिए । और न वहाँ लैम्प ही जलाना चाहिए ।

(१४) आने जाने के रास्ते में जलता हुआ लैम्प नहीं रखना चाहिए, वरना पैर लग जाने से लैम्प उलट जायगा और आग लग जायगी।

(१५) रसोई उठ जाने के बाद आग को जब तक अच्छी तरह न बुझा लिया जाय उसकी राख को बाहर नहीं फेंकना चाहिए।

Printed and published by Krishna Ram Mehta at the Leader Press, Allahabad.

लेखक की अन्य पुस्तकें

स्काउटिंग और ग्राम-सेवा (हिन्दी)	१)
स्काउटिंग और देहात की ख़िदमत (उर्दू)	१)
Better Villages through Scouting	0-8-0
कोमल पद शिक्षण	।=)
ध्रुवपद शिक्षण	१)
रैली प्रदीपिका	१)
हवाई हमले से हिफ़ाज़त	१)
स्काउट खेल	१॥)
स्काउट ड्रिल	॥)
बालवीर या शेर बच्चा	१)
ममोमा (हिन्दी सिगनलिंग)	।=)
कहानियों द्वारा शिक्षा	।=)
रसोइया	=)
होमनर्सिंग	=)
पब्लिक हेल्थमैन	=)
स्काउट के असफल दल ; कारण और इलाज	=)॥

मैनेजर—लीडर प्रेस, इलाहाबाद